

कार्यालय ज्ञान

उत्तराखण्ड राज्य में सैनिक विश्राम गृहों के निर्माण हेतु निदेशक, सैनिक कल्याण के पत्रांक संख्या 4003/सै.क./सै.वि.गृ/प्रस्ताव/नीति दिनांक 27 जून, 2008 के द्वारा प्रेषित प्रस्तावों पर सैन्यक विचारोपरान्त निम्नलिखित प्रक्रिया निर्धारित की जाती है:-

क्रमांक	विषय	प्राविधान
1	उद्देश्य	सैनिक विश्राम गृहों के निर्माण का मुख्य उद्देश्य पूर्व/संवर्त सैनिकों तथा उनके आश्रितों को निर्धारित मनचाहों के लिए न्यूनतम वर पर अधिवास उपलब्ध कराना। उपलब्धता की स्थिति में इन विश्राम गृहों को सामान्य नागरिकों को भी अधिवास हेतु उपलब्ध कराया जा सकेगा। इस संबंध में भारत सरकार एवं रक्षा मंत्रालय के सुसंगत दिशा-निर्देशों का भी अनुपालन किया जायेगा, ताकि भारत सरकार से 50 प्रतिशत का कन्ट्राह भी प्राप्त किया जा सके।
2	सैनिक विश्राम गृहों के निर्माण हेतु प्राथमिकताएं	पूर्व सैनिक एवं उनके आश्रित प्रायः जिला सैनिक कल्याण कार्यालयों एवं राज्य सरकार के अन्य विभागों में अपनी विभिन्न समस्याओं के निराकरण हेतु दूर-दराज के क्षेत्रों से आते हैं। प्रदेश की भौगोलिक परिस्थितियों तथा आवागमन के पर्याप्त साधन असमय उपलब्ध न होने के कारण उन्हें अपने कार्य पूर्ण होने की स्थिति में रात्रि विश्राम हेतु विभिन्न होटलों एवं धर्मशालाओं में ठहरना पड़ता है, जिस पर अनुविधा के अतिरिक्त उन्हें काफी धनराशि व्यय करनी पड़ती है। विश्राम गृहों के निर्माण हेतु स्थलों का चुनाव करते समय ऐसे स्थान प्रस्तावित/चिह्नित कर लिये जायेंगे जहाँ पर पूर्व/संवर्त सैनिकों व उनके आश्रितों (उपलब्धता के आधार पर सामान्य नागरिकों हेतु भी) के लिये विश्राम गृह का उपयोग किया जाना सुगम एवं पहुंच में हो। सनस्त-जिला मुख्यालयों में सैनिक विश्राम गृहों का निर्माण किया जायेगा। तहसील एवं ब्लॉक मुख्यालयों के ऐसे स्थलों में जहाँ यात्रा करना सुगम हो, में सीमित प्रस्ताव उपलब्ध कराते समय ऐसे स्थलों को प्राथमिकता दी जायेगी जहाँ पर पूर्व सैनिकों की अधिकता एवं आवश्यकता भी हो। उपरोक्त तथ्यों को मध्यनजर रखते हुये राज्य स्तरीय जिला स्तरीय एवं तहसील स्तर पर सैनिक गृहों का निर्माण किया जायेगा। शासनोदेश संख्या-33/XVII(2)/2008-29 (सै0क0)/2002 दिनांक 22 जनवरी, 2008 द्वारा यह निर्णय लिया जा चुका है कि उपलब्धता की स्थिति में विश्राम गृहों को सामान्य पर्यटकों को भी उपलब्ध कराया जायेगा। अतः विश्राम गृह निर्माण की नीति निर्धारण के समय इस तथ्य पर भी विचार किया

		<p>जाना होगा। यदि विश्राम गृहों का निर्माण आवश्यकता से युक्त बनाया जायेगा तो जहाँ एक ओर पर्यटन व्यवसाय के लिए आधारभूत संरचना तैयार होगी वहीं दूसरी ओर पूर्व सैनिकों एवं उनके आश्रितों को अनेक रूपों में रोजगार के साधन उपलब्ध होंगे।</p>
3.	सैनिक विश्राम गृहों की श्रेणियाँ	<p>राज्य में राज्य स्तरीय, जिला स्तरीय, तहसील एवं ब्लॉक स्तरीय सैनिक विश्राम गृहों की स्थापना की जायेगी। सैनिक विश्राम गृहों की उपयोगिता एवं सुविधा के दृष्टिगत चार श्रेणियों (A-D) में विभक्त किया जायेगा। तहसील/ब्लॉक स्तर पर सैनिक विश्राम गृहों का निर्माण वहाँ पर पूर्व सैनिकों एवं उनके आश्रितों की उपलब्ध संख्या के आधार पर निर्धारित कर किया जाना चाहिए। इसके साथ ही उस क्षेत्र में उसकी उपयोगिता के साथ-साथ पर्यटन के क्षेत्र में सम्भावना/उपयोगिता को भी ध्यान में रखा जायेगा। जनपद देहरादून के अतिरिक्त अन्य जनपद एवं महत्वपूर्ण स्थलों यथा हरिद्वार, नैनीताल, ऋषिकेश एवं घास धाम स्थलों इत्यादि में राज्य स्तरीय सैनिक विश्राम गृहों का निर्माण किया जा सकेगा। इसके लिए नये स्थलों पर राज्य स्तरीय विश्राम गृहों की स्थापना के लिए स्थान विशेष की आवश्यकता, उक्त स्थानों पर पूर्व उपलब्ध अन्य सरकारी विश्राम गृहों के संचालन की वर्तमान प्रास्थिति, उक्त हेतु स्थान चयन के साथ साथ यदि किसी जनपद में जिला स्तरीय विश्राम गृह स्थापित है तो उसे यथा आवश्यकता उच्चोक्त भी किया जा सकेगा। इसके अतिरिक्त आवश्यकतानुसार जिला स्तरीय, तहसील स्तरीय एवं ब्लॉक स्तर पर भी सैनिक विश्राम गृह का निर्माण किया जायेगा।</p>
4.	भूमि की उपलब्धता	<p>समस्त जिलाधिकारियों के माध्यम से उपयुक्त भूमि चयन कर प्रस्ताव निदेशालय, सैनिक कल्याण के माध्यम से शासन को उपलब्ध कराया जायेगा। उपयुक्त भूमि का आशय यह है कि चयनित स्थल सुगम व कार्यस्थल/मुख्यालय/क्षेत्र विशेष की पहुँच में हो जिससे कि उसका पूर्ण सदुपयोग हो सके। राज्य स्तरीय, जिला स्तरीय, तहसील एवं ब्लॉक स्तरीय सैनिक विश्राम गृहों के निर्माण हेतु निश्चित भूमि की सीमा इसलिए निर्धारित नहीं की जा रही है कि कतिपय स्थलों पर भूमि की उपलब्धता को देखते हुये जिला सैनिक कल्याण कार्यालय/निदेशालय, सैनिक कल्याण द्वारा आवश्यकतानुसार उपयुक्त भूमि चयनित कर प्रस्ताव शासन को उपलब्ध कराया जायेगा।</p>
5.	वित्तीय मानक/मापदण्ड	<p>चूँकि राज्य में विषम भौगोलिक परिस्थितियाँ हैं तथा पर्यटन एवं मैदानी जनपदों में निर्माण लागत एक समान नहीं रहती। अतः राज्य के सैनिक विश्राम गृहों के निर्माण हेतु निश्चित धनराशि का निर्धारण नहीं किया जा रहा है। वित्तीय मानक व मापदण्ड के संबंध में विभिन्न श्रेणियों (राज्य/जिला/तहसील/ब्लॉक स्तरीय) के लिये उपयोगिता तथा क्षेत्र विशेष की आवश्यकता के आधार पर निर्माण प्रारूप (कक्षों की संख्या तथा प्रकार के आधार पर) निर्धारित किया जाएगा। भूमि की उपलब्धता एवं अन्य मापदण्डों</p>

		का दृष्टत हुये सैनिक विश्राम गृहों के निर्माण का अग्रगण्य प्रस्ताव निदेशालय द्वारा उपलब्ध कराया जायेगा, जिसमें शासन स्तर पर गठित तकनीकी विभाग (टीओसीओ-विन०) के परामर्शोपरान्त नियमानुसार स्वीकृति प्रदान की जायेगी। सैनिक विश्राम गृहों में उपलब्ध सुविधाओं के दृष्टिगत उनका किराया निर्धारित किया जायेगा।
६.	विश्राम गृहों का प्रबंधन	विश्राम गृहों का प्रबंधन Public Private Partnership तरीक से करने का प्रयास किया जायेगा, जिससे इसका प्रशासनिक व्यय बहन हो जाये। इसके अतिरिक्त इन विश्राम गृहों के प्रबंधन हेतु अतिरिक्त पदों को सृजित करने पर विचार नहीं किया जायेगा।
७.	कार्ययोजना	निदेशालय द्वारा सैनिक विश्राम गृहों के समग्रवृद्ध निर्माण हेतु एक कार्ययोजना (Action Plan) तैयार की जायेगी, जिसमें विश्राम गृहों के स्थापना एवं संचालन संबंधी समस्त गतिविधियां प्रारम्भ करने हेतु एक निश्चित समय-सीमा निर्धारित की जायेगी तथा उसका कड़ाई से अनुपालन सुनिश्चित किया जायेगा।
८.	अन्य	उपरोक्त के अतिरिक्त सैनिक विश्राम गृहों के निर्माण हेतु भारत सरकार के विभिन्न दिशा-निर्देशों/सुसंगत नियमों तद्विषयक अन्य मानकों/मापदण्डों का भी अनुपालन किया जायेगा।

२. उक्तानुसार प्रक्रिया निर्धारण संबंधी शासन के पूर्व कार्यालय ज्ञाप संख्या- 537 /XVII(2) /2008-48(सै०क०)/2003 दिनांक 10 सितम्बर, 2008 को निरस्त सनजा जायेगा।

३. यह आदेश वित्त विभाग के अशासकीय पत्र संख्या:-354(P)/XXVII-3/2008 दिनांक 16 अक्टूबर, 2008 में प्राप्त उनकी सहमति के क्रम में जारी किये जा रहे हैं।

भवदीय

(राधा रतूड़ी)
सचिव।

पुष्ठांकन संख्या:- 610 /XVII-3/2008-48(सै०क०)/2003।

प्रतिलिपि- निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित:-

१. प्रमुख सचिव, मा० मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड शासन।
२. निजी सचिव, मुख्य सचिव, उत्तराखण्ड शासन।
३. आयुक्त गढ़वाल एवं कुमाऊँ मंडल, उत्तराखण्ड।
४. समस्त जिलाधिकारी, उत्तराखण्ड।
५. निदेशक, सैनिक कल्याण एवं पुनर्वास, उत्तराखण्ड, देहरादून।
६. समस्त जिला सैनिक कल्याण अधिकारी, उत्तराखण्ड।
७. आदेश पंजिका।

आज्ञा से,

(राधा रतूड़ी)
सचिव।